Vol. 9, Issue-2 (July 2020) pp. 78-83 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

कथक नृत्य में लोकनाट्य - रामलीला के तत्व

डॉ. विधि नागर
एसोसिएट प्रोफेसर, नृत्य विभाग
संगीत एवं मंच कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
Email: vidhinagar@rediffmail.com

सारांश

लोकनाटयों की एक समृद्ध गौरवशाली परम्परा रही है. कथावाचन में कब नाट्यों का जुड़ाव हो गया यह कहना मुश्किल है, रामलीला की लगभग 500 वर्षों की समृद्ध परम्परा के प्रमाण हमें मिलते हैं. कथक, शास्त्रीय नृत्य की परम्परा भी ''कथा कहे सो कथिक कहावे'' से मिलती है. प्रस्तुत शोध प्रपत्र में यह बताने का प्रामाणिक प्रयास किया गया है कि कथक ने रामलीला के किन तत्वों को अपना अंग बनाया और नृत्य की इस परम्परा को समृद्ध किया.

मुख्य शब्द: कथक, रामलीला, लोकधर्मी, कथावाचन.

रामायण में प्राप्त नृत्य के प्रमाण:

रामायण की रचना महर्षि बाल्मीकि ने (ई0सा पूर्व 500 से ई0 500 तक के रचनाकाल में) संस्कृत भाषा में की थी और इसको संस्कृत का प्रथम काव्य माना जाता है. रामायण काल में जब राजा ही संगीत के मर्मज्ञ थे तो प्रजा तो होती ही. इस काल में संगीत के तीनों अंगों की अर्थात- गायन, वादन तथा नृत्य की उन्नति हुयी. रामायण में प्राप्त कुछ नृत्य के संदर्भों का अवलोकन करते हैं-

''वैहारिकाणां शिल्पानां ज्ञाता'' (रामायण 2/1/7)

अर्थात स्वयं श्रीराम संगीत वाद्य चित्र आदि कलाओं के ज्ञाता थे तथा संस्कृत-प्राकृत मिश्रित भाषा के नाटकों के जानकार थे.[1]

''प्रसार्य हस्तान् प्रननर्त चाग्रतः''(रामायण 7/31/44)

रावण भी नृत्य गीत के साथ शिव जी की पूजा करता था, वह वीणा का कुशल वादक और ‘‘रावण ताण्डव स्त्रोत’’ की रचना करने वाला ज्ञाता भी था.

रामायण (5/10/37-49) से ज्ञात होता है कि रावण की पत्नी मंदोदरी तथा अंतःपुर की अन्य स्त्रियाँ भी इन कलाओं में निपुण थीं.

‘‘वादयन्ति तथा शान्ति लास्यन्त्यपि चापरे’’ (रामायण 2/69/14)

जिस समय भरत अपनें ननिहाल में थे, उनके दुस्वप्न से दुखित मन के मनोरंजन के लिये ऐसी ही नाट्यशाला में एक नाटक का आयोजन किया गया था वहाँ कुछ स्त्रियाँ मधुर वाद्य बजा रहीं थीं.

‘‘नटनर्तकसंघानां गायकानां च गायताम्.
यतः कर्णसुखवाचः सुश्राव जनता ततः.. (रामायण 2/67/15)

श्री राम-राज्याभिषेक के अवसर पर भी जन साधारण नटों, नर्तकों व गायकों की कर्ण सुखद वाणियों को बड़ी तन्मयता से सुन रह थे.[2] ऐसे अनेक उदाहरण दृष्टव्य हैं. नर्मदा नदी के तट पर बालू की वेदी के बीच शिव मूर्ति स्थापित करके रावण ने पूजा अर्चना तथा वन्दना करते हुये हाथ फैलाकर नृत्यगान भी किया था.

‘‘नतः सतामार्तिहरं परं परं, वरप्रदं चन्द्रमुख भूषणम्.[3]

विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि रामायण में नृत्त और नृत्य दोनों का उल्लेख प्राप्त होता है. परन्तु कथक या कथिक शब्द का कोई भी उल्लेख नहीं मिलता है.

‘‘कथक’’ शब्द का ऐतिहासिक प्रमाण:

सर्वप्रथम महाभारत में मिलता है. ‘‘कथकश्चचापरेराजन् श्रमणच्श्र बनोकसः’’(1/251/3)[4]
अर्थात वनों में रहने वाले ब्राहमण और कथक लोग मधुर स्वरों में दिव्य आख्यान (व्याख्या) करते हैं.
इसके पश्चात् अनेक ग्रन्थों में मिलता है यथा- अमरकोष, हर्षचरित (7वीं शताब्दी), संगीत रत्नाकर (13वीं शताब्दी) परन्तु यह कथक शब्द गायकों के रूप में मिलता है. 13वीं शताब्दी के अंत में मुगलों द्वारा भारतवर्ष पर आक्रमण हो चुका था उत्तर भारत में सभी हिन्दू तीर्थों जिनमें मथुरा, वृन्दावन आदि स्थान थे, आक्रमणकारियों द्वारा भयभीत थे. 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गोस्वामी तुलसीदास जी ने ‘‘रामलीला’’ का प्रवर्तन किया.

रामलीला:

गोस्वामी तुलसीदास जी ही रामलीला के प्रवर्तक हैं. ऐसा माना जाता है कि चित्रकूट में भगवान राम के साक्षात् दर्शन पाकर भी वह उन्हें पहचान न सके और बाद में विहवल होकर पछताने लगे. तब हनुमान जी ने स्वप्न में उनसे कहा कि

कलयुग में साक्षात् भगवान के दर्शन संभव नहीं हैं अतः लीला के स्वरूपों में उनके दर्शन करो. इस घटना से तुलसीदास जी को रामलीला कराने की प्रेरणा मिली और उनके प्रयास से वाराणसी, अयोध्या व चित्रकूट में ‘‘रामलीला’’ का मंचन होने लगा.[5]

महाभारत में खिल पर्व ‘हरिवंश पुराण’ (सन् 1183) में इस बात का उल्लेख मिलता है कि कृष्ण जी के पुत्र प्रद्युम्न ने रामायण पर आधारित नाटकीय प्रदर्शन कर वज्रपुर निवासियों को प्रसन्न किया था.[6]

वर्तमान में रामलीला हमें उस रूप में दृष्टिगोचर नहीं होती है जैसी तुलसीदास जी ने प्रारम्भ की थी, उसमें 500 वर्षों में बहुत बदलाव आये. काशी या अन्य धार्मिक प्रदेशों में की जाने वाली ‘‘रामलीला’’ का लोक में बहुत विस्तार हुआ जैसे लोक गतिमानता, लोक संवेदना, लोकभाषा, लोककला और अभिनय किन्तु यह मनोरंजन की दृष्टि से नहीं खेला जाता था वरन् धार्मिक अनुष्ठान के रूप में इसे मान्यता आज तक प्राप्त है. अश्विन मास (अक्टूबर) में शारदीय नवरात्र से दीपावली तक रामलीला का समस्त उत्तर भारत में विस्तार होता है. यह 11 दिन से 31 दिनों तक होती है.

डॉ. भानुशंकर मेहता कहते हैं कि रामलीला को नाटक मानना ठीक नहीं, उनके अनुसार यह भारतीय संस्कार, धर्म-दर्शन और ज्ञान-विज्ञान का दर्शन है. इसलिये वे प्रेक्षक में भक्ति, सहज तादात्म्य और विश्वास जैसे गुणों को अनिवार्य मानते हैं. ‘‘ रामलीला तो एक नाटक नहीं है बल्कि एक धार्मिक अनुष्ठान है.’’[7]

रामलीला का मंचन कुछ अंतर लिये हुये राजस्थान, मध्यप्रदेश और कुमांऊं क्षेत्रों में होता है. कुमांऊं की रामलीला तुलसीदास जी द्वारा रचित ‘‘रामचरित मानस’’ के आधार पर ही होती है. रामलीला का विस्तार न सिर्फ भारत में है वरन् दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों जैसे- थाईलैण्ड, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया इत्यादि में भी प्रमुख शास्त्रीय रूप में जाना जाता है.

रामलीला मंचन:

रामलीला किसी भी खुले स्थान पर मंचित की जाती है. रामलीला का मुखिया या सूत्रधार ‘‘व्यास’’ कहलाता है. रामलीला के प्रमुख पात्रों को स्वरूप कहा जाता है. राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और सीता के लिये किशोर उम्र के बच्चों का ही चुनाव होता है और कुछ दिनों तक उनको मंचन से पूर्व सात्विक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है जैसे- उपवास, सात्विक भोजन, एकांत, पूजन ध्यान इत्यादि.

लीला में उन्हें भगवान मानकर ही चरण-वन्दन किया जाता है. व्यास जी रामायण की कथा को बांचते है तथा झांकी स्वरूप इन लीलाओं का मंचन होता है. वाराणसी के रामनगर की रामलीला तो विश्व प्रसिद्ध है. उसमें अलग-अलग स्थानों पर लीला का मंचन होता है जैसे- नाटी इमली में भरत मिलाप, चेतगंज में नक्कटइया इत्यादि. रोचक बात यह है कि हनुमान, रावण, विभीषण इत्यादि के पात्र अनेक पीढ़ियों से वह लोग हीं अभिनीत करते आ रहे है. जिनके पूर्वज इन

पात्रों को निभाते थे. कतिपय स्थानों में रामलीला पर पारसी रंगमंच का प्रभाव स्पष्ट दिखता है वह भड़कीले सिंथेटिक कपड़ों का प्रयोग, रूपसज्जा का अत्यधिक प्रयोग करते हैं. वानर, भालू, राक्षसों के लिये मुखौटों का प्रयोग करते है.

रामलीला के प्रमुख वाद्य हारमोनियम, तबला या ढोलक, मंजीरा और गान करने वाले गायक होते है. रामलीला चूंकि धार्मिक अनुष्ठान है तो प्रारम्भ करने से पहले मंगलाचरण, गणेश-पूजन, मुकुटपूजन इत्यादि होते हैं. उस दिन की लीला समाप्ति पर आरती होती है. तथा सम्पूर्ण लीला की समाप्ति पर हवन-पूजन और ब्रहम भोज की प्रथा है.

अन्य नृत्य शैलियों तथा रामलीला का संबंध-

- सर्वप्रथम पं0 उदयशंकर ने छायानाट्य के रूप में प्रस्तुत किया.
- सन् 1950 में उदयशंकर के ही शिष्य सचिन शंकर और नरेन्द्र शर्मा ने नृत्य नाटिका के रूप में रामलीला की सम्मोहक प्रस्तुति दी.
- सन् 1952 में शांतिवर्धन ने जीवित कठपुतलियों की रामायण प्रस्तुत की.
- श्रीमती रूकमिणी देवी अरूण्डेल ने भरतनाट्यम शैली में प्रस्तुत की.
- सन् 1967 में दिल्ली के भारतीय श्रीराम कला केन्द्र ने रामलीला का मंचन प्रारम्भ किया जो आज भी अनवरत रूप से चल रहा है.
- पद्मविभूषण पं0 बिरजू महाराज ने ‘‘कथा रघुनाथ की’’ प्रस्तुत किया.
- पं0 लच्छू महाराज ने ‘‘सीता स्वयंवर’’ की प्रस्तुति अपनी शिष्याओं से करवाई.[8]

अनेक कथक नर्तक रामकथा को एकल तथा समूह रूप में प्रस्तुति करते है.

कथक नृत्य में रामलीला के तत्व तथा साम्यता:

- संवाद- लोकनाट्य रामलीला में भी तथा कथक नृत्य में भी दर्शकों के साथ सीधा संवाद किया जाता है.
- पुरूष नर्तक- दोनों में ही पुरूष नर्तकों का वर्चस्व रहा है. वर्तमान में स्त्रियाँ की भी बराबर से सहभागिता है.
- कथायें- कथक के प्राण ‘कथायें’’ है, रामलीला में रामकथा के प्रसंगों को ही दिखाया जाता है.
- लोकमंगल- दोनों ही कलाओं के मूल में लोक मंगल की ही भावना निहित है.
- प्रश्रय- राजा-रजवाड़े फिर कालान्तर में जमींदार तथा धनाढ्य परिवारों द्वारा ही दोनों कलाओं को प्रश्रय मिलता रहा है.

- रंगमंच- यह खुले मैदानों, मंदिर प्रांगण मे लीला खेली जाती है या तीन तरफ पर्दे से घेरकर मंच बना दिया जाता है. ठीक इसी प्रकार तब कथक नृत्य में भी यही प्रचलन था.
- वाचिक अभिनय- रामलीला के वाचिक अभिनय का बहुत सा रूपांतरण हमें कथक नृत्य में देखने को मिलता है.
- वस्त्र विन्यास- रामलीला की पोशाक जो मुख्यतः धोती, बंडी, अंगरखा, दुपट्टा, पटका इत्यादि है जो पुरूष कथक नर्तकों की भी वेशभूषा है.
- संगीत- लभगभ जिन वाद्यों की आवश्यकता रामलीला में होती है, उतने वाद्यों से ही कथक नर्तक भी अपनी आवश्यकता पूरी कर लेते है. वर्तमान में नृत्य विषयक वाद्यों को भी सम्मिलित कर लिया जाता है.

निष्कर्ष:

आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व रामलीला का प्रारम्भ हुआ था परन्तु कथावाचन की परम्परा उससे भी पूर्व से चली आ रही थी जो कालान्तर में अनेक लोकनाट्यों से प्रभावित होकर तथा अपने स्वरूप के अंशों को भी बचाये हुये एवं एक नये रूप जिसमें नाट्य तथा नृत्य के भी अंश हो प्रस्तुत हुयी तथा कथक नृत्य के नाम से प्रसिद्ध हुई. इसमें विभिन्न लोकनाट्यों तथा लोक प्रचलित कला शैलियों की झलक देखने को मिलती है जैसे- कथावाचन, भागवत गान, रामलीला, रासलीला, ढ़ाढ़ा-ढांढिन इत्यादि.

रामलीला जो एक तरफ, बहुत बड़ा धार्मिक अनुष्ठान है, लोक के प्राण जिसमें बसते हैं. वैसे ही कथक में भी रामायण अथवा ‘‘रामचरित मानस’’ के प्रसंगों पर गान तथा नृत्य करने की प्राचीन परम्परा रही है.

वंदना, श्लोक, दोहा, चैपाई, कवित्त, छद, राम-झूला, चैती, ठुमरी, भजन, पद के साहित्य से श्रीराम के गुणगान कथक नर्तक भी करते है तथा जन-जन तक अन्धकार पर प्रकाश की जीत, विषम परिस्थितियों में धीरज न खोना, सभी के साथ मिलकर चलना, सत्य पर अडिग रहना इत्यादि संदेशों की ऊर्जा लोक मे भरने का कार्य करते हैं.

कथक नृत्य में प्रमुख नायक राम तथा कृष्ण हैं जो त्रेता तथा द्वापर युग के नायक हैं. उनके जीवन के प्रत्येक वृत्तांत को बांचना, नाट्य रूप में खेलना, नृत्य में अभिनीत करना, काव्य में लिखना, कहानियों में सुनना-गुनना इत्यादि सभी विद्याओं के कलाकार करते आये है. मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के मर्यादित जीवन को सभी अपने जीवन में उतारना चाहते हैं.

जीवन की सार्थकता भी इसी में है कि हम अपने जीवन को मर्यादित रूप से जीयें जिससे सभ्य, सत्य, सुन्दर समाज की स्थापना हो सके. मनुष्य की इसी आकांक्षा ने रामायण, रासलीला, राम प्रसंगों को आज भी घर-घर में जीवित रखा है.

सूत्रधार, व्यास, कथावाचक या कथक नर्तक परम्परा से जिन कथाओं को सुनते थे, मंदिरों के प्रांगण में दर्शकों, भक्तों को इस प्रकार कथा सुनाते थे जिसमे हमें कथावाचन शैली भी मिलती है तो रामलीला का मंचन भी जीवंत हो जाता है तो वहीं कथिक के कथक नृत्य के कवित्त भी जीवंत हो उठते है. देखिये राम कथा एक स्वरचित रचना में कि किस प्रकार कथक नर्तक, दर्शकों से संवाद स्थापित करता है-

राम की कथा को वह गाता और बांचता था
सीता के सतीत्व को नाच में दिखाता था
अहिल्या, शबरी, केवट के कवित्त को झट-पट गुनता था
खर-दूषण का वध कर, नाक-कान भी शूर्पनखा के काटता था
इस प्रकार ‘‘कथिक’’ वो मनचले युवकों को सीख यह बांटता था
कि सोना का हिरण बस छलावा है, और कुछ नहीं
रेखा खींची लक्ष्मण ने, पार कभी करना नहीं
जो सुनी होती सीता जी ने, बंदी कभी होती नहीं
राम-लखन बन घूमें, युद्ध कभी होता नहीं
रावण को जीतकर, अयोध्या में दीप जले
राजा-श्रीराम बने, हनुमत का बल बढ़े
घर-घर में धूम मची, रंगों के दीप जले
मन-मन में आस जगी, अन्धकार में ज्योत जगे
कथा अब समाप्त हुयी, तुम अपने हम अपने घर को बढ़े
बोलो श्री राम चन्द्र की जय-----

संदर्भ ग्रंथ:

1. पुरु दाधिची, *कथक नृत्य शिक्षा भाग 2*, प्रकाशक: सुधा सिंह, इंदौर, म. प्र., 1987, पृ. 5
2. वही
3. नीता गहरवार, *भारतीय संस्कृति में नृत्य*, प्रकाशक: बी.आर. रिदम**,** नई दिल्ली, 2015, पृ. 51
4. विधि नागर, *कथक नर्तन भाग 2*, प्रकाशन: वागेश्वरी पब्लीकेशन, लखनऊ, 2003 पृ.15
5. पुरु दाधिची, *कथक नृत्य शिक्षा भाग 2*, प्रकाशक: सुधा सिंह, इंदौर, म. प्र., 1987, पृ 53
6. वही**,** पृ 5
7. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, *भारतीय लोकनाट्य,* प्रकाशक: वाणी प्रकाशन**,** द्वितीय संस्करण 2011, नई दिल्ली**,** पृ 41
8. पुरु दाधिची, *कथक नृत्य शिक्षा भाग 2*, प्रकाशक: सुधा सिंह, इंदौर, म. प्र., 1987, पृ 55-56